Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part – III (Hons)
Paper – V
Philosophy of Religion

1

5. फीटिशवाद (Fetishism) :–

फीटिशवाद भी एक आदिम धर्म है जिसमें सर्वप्रथम पन्द्रहवीं शताब्दी में पुर्तगाल के नाविकों ने फीटिश को आराधना का विषय माना। इसके अतिरिक्त पश्चिमी अफ्रीका में भी फीटिश की आराधना की जाती है। इस आराधना में किसी विचित्र आकार के पत्थर अथवा मृतक शरीर का कोई अंग फीटिश मान लिया जाता है।

शाब्दिक अर्थ के रूप में फीटिश शब्द की उत्पत्ति फीटिको (Feitico) से हुआ है जो कि लैटिन शब्द फैक्टिटियस से बना है जिसका अर्थ कृत्रिम होता है और फीटिको का अर्थ आकर्षण होता है। इस रूप में फीटिश शब्द का अर्थ कृत्रिम अथवा आकर्षण होता है किन्तु धर्म के क्षेत्र में फीटिश को आराधना का विषय माना जाता है अतः धर्म के क्षेत्र में फीटिशवाद का अर्थ एक कृत्रिम अथवा प्रतीक बनाकर उसकी आराधना अथवा पूजा करने की पद्धति होगा। इस प्रकार फीटिशवाद में किसी आत्मा को किसी वस्तु से सम्बन्धित करके अर्थात् उस वस्तु को किसी

आत्मा का प्रतीक बनाकर उसकी आराधना करते हैं।

इस आदिम धर्म की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें यह माना जाता कि फीटिश में आत्मा के निवास से उसमें रहस्यमय शक्ति आ जाती है और इस आत्मा के प्रवेश करने पर वह फीटिश विभिन्न प्रकार की जादुई करामात करने लगता है। हालांकि इसमें फीटिश और आत्मा में किसी भी प्रकार के आन्तरिक सम्बन्ध को स्वीकार नहीं किया जाता इसीकारण यह माना जाता है कि आत्मा फीटिश से स्वतन्त्र है और वह अपनी इच्छानुसार उसको धारण कर लेती है तथा यदि उसको त्यागने का अवसर आ जाए तो उसका त्याग भी कर देती है। आत्मा के फीटिश को त्यागने का मुख्य लक्षण फीटिश का जादुई करना बन्द कर देना होता है इसलिए फीटिश के ऐसा होने पर उनका त्याग कर दिया जाता है तथा तदन्तर नये फीटिश की खोज की जाती है। इसप्रकार उपयोगितावाद फीटिशवाद की मुख्य प्रवृत्ति है क्योंकि इसमें फीटिश को उसी समय तक पूजा जाता है जबतक कि वह उपयोगी होता है और जैसे ही उपयोग समाप्त हुआ वैसे ही उसका बहिष्कार कर दिया जाता है।

इसप्रकार फीटिशवाद की मुख्य मान्यतायें हैं-

1. आत्मा की स्वतन्त्र सत्ता — फीटिशवाद में जैसा कि उपर्युक्त विवेचन में स्पष्ट किया गया है, आत्मा की स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार की गई है जो कि अपनी इच्छानुसार समय आने पर फीटिश को धारण कर लेती है और अवसर आने पर उसका त्याग भी कर देती है।

2. आत्मा को स्वार्थ सिद्धि का साधन मानना — फीटिशवाद इस मान्यता पर आधारित है कि आत्मा फीटिश में निवास करके उनकी समस्त इच्छाओं की पूर्ति करती है और अपने भक्तों के जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान करती है। इसप्रकार आत्मा को स्वार्थ सिद्धि का साधन कर ही फीटिशवाद का विकास हुआ है।

अन्य आदिम धर्मों की भाँति ही इस धर्म में भी अन्धविश्वासों की अत्यधिक प्रधानता है जिसके कारण इसको धर्म की कोटि में रखना उचित नहीं है क्योंकि इसको धर्म कहना धर्म शब्द का गलत प्रयोग करना ही माना जायेगा। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक दृष्टि से इसको धर्म के विकास के प्रतीक के रूप में मानना भी गलत होगा क्योंकि यह विकसित रूप न होकर धर्म का विकृत रूप है।